अध्याय 2: जूझ

विषय-सूची

1 प्रश्नावली · 6 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1 अभ्यास 6 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1 — अभ्यास

प्रश्न 1

'जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

हल

'जूझ' का अर्थ है — संघर्ष करना, जूझते रहना, हार न मानना।
यह शीर्षक पूर्णतः सार्थक है क्योंकि पूरी कहानी नायक (लेखक आनंद यादव) के निरंतर संघर्ष का वृत्तांत है।
नायक को पढ़ाई के लिए पग-पग पर जूझना पड़ता है —
पहले दादा (पिता) के विरोध से लड़कर पाठशाला जाने की अनुमति लेनी पड़ती है।
फिर पाठशाला में नए सहपाठियों की छेड़छाड़, गमछा खींचना, धोती खींचने की कोशिश जैसी घटनाओं से जूझना पड़ता है।
साथ ही सुबह-शाम खेत पर काम करते हुए भी पढ़ाई जारी रखनी पड़ती है — दोनों मोर्चों पर एक साथ लड़ाई।
इस संघर्ष के बावजूद नायक हार नहीं मानता। वह वसंत पाटील से प्रेरणा लेकर पढ़ाई में मन लगाता है और सौंदलगेकर मास्टर के मार्गदर्शन में कविता की दुनिया में अपनी पहचान बनाता है।
इस प्रकार 'जूझ' शीर्षक नायक की केंद्रीय चारित्रिक विशेषता — अदम्य संघर्षशीलता और जिजीविषा — को पूर्णतः उजागर करता है।

उत्तर: 'जूझ' शीर्षक सर्वथा उचित है — यह कथा नायक की अदम्य संघर्षशीलता को उजागर करता है। नायक दादा के विरोध, पाठशाला की कठिनाइयों और खेती के बोझ के बावजूद पढ़ाई और कविता के लिए जूझता रहता है।

प्रश्न 2

स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

हल

लेखक के मन में कविता रच लेने का आत्मविश्वास कई घटनाओं और अनुभवों से पैदा हुआ —
पहला कारण: सौंदलगेकर मास्टर स्वयं कविता करते थे। उनके घर में अनेक मराठी कवियों के काव्य-संग्रह थे। मास्टर उन कवियों के चरित्र और संस्मरण सुनाते थे, जिससे लेखक को कवि 'आदमी' जैसे लगने लगे — हाड़-माँस के साधारण मनुष्य।
दूसरा कारण: मास्टर के दरवाजे पर छाई मालती की बेल पर मास्टर ने एक कविता लिखी थी। लेखक ने वह कविता और वह लता दोनों देखे थे। इससे उसे लगा कि अपने आसपास — अपने गाँव में, अपने खेतों में — कितने

ही दृश्य हैं जिन पर वह कविता बना सकता है।

तीसरा कारण: खेत में काम करते-करते, भैंस चराते-चराते लेखक ने फ़सलों पर, जंगली फूलों पर तुकबंदी शुरू की। वह कविताएँ भैंस की पीठ पर या पत्थर की शिला पर कंकड़ से लिख लेता था।

चौथा कारण: जब वह रचीं कविताएँ मास्टर को दिखाता, तो मास्टर शाबाशी देते और कविता के शास्त्र पर पूरी महफ़िल होती — छंद, अलंकार, भाषा आदि पर।

इन सब अनुभवों ने मिलकर लेखक के मन में यह आत्मविश्वास जगाया कि वह भी कविता रच सकता है।

उत्तर: सौंदलगेकर मास्टर का स्वयं कवि होना, उनके घर में काव्य-संग्रहों की भरमार, कवियों को साधारण मनुष्य के रूप में देखना, मालती-बेल की कविता देखना और खेत-खलिहान में स्वयं तुकबंदी करने की प्रेरणा — इन सबने लेखक के मन में कविता रचने का आत्मविश्वास पैदा किया।

प्रश्न 3

श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई।

हल

सौंदलगेकर मास्टर के अध्यापन की निम्नलिखित विशेषताएँ कविता के प्रति लेखक में रुचि जगाने में सहायक बनीं —

1. सुरीला गला और छंद की बढ़िया चाल: वे कविता पढ़ाते समय स्वयं रम जाते थे। उनका गला सुरीला था, छंद की चाल बढ़िया थी और उनमें रसिकता थी।
2. अभिनय सहित भाव-ग्रहण: पहले कविता गाकर सुनाते, फिर बैठे-बैठे अभिनय के साथ कविता का भाव ग्रहण कराते।
3. तुलनात्मक प्रस्तुति: एक ही भाव की अन्य कवियों की कविताएँ भी सुनाते, जिससे भाव की व्यापकता समझ में आती।
4. कवियों के संस्मरण: कवि यशवंत, बा-भ-बोरकर, भा-रा-तांबे, गिरीश, केशव कुमार आदि से अपनी मुलाकात के संस्मरण सुनाते, जिससे कवि लेखक को 'आदमी' लगने लगे।
5. स्वयं की कविता: वे अपनी कविताएँ भी सुनाते थे, जिससे लेखक को लगा कि वह भी कविता कर सकता है।
6. प्रतिक्रिया और प्रोत्साहन: लेखक की कविताएँ देखकर शाबाशी देते और कविता के शास्त्र पर पूरी महफ़िल करते — भाषा, छंद, अलंकार पर विस्तार से बताते।

इन सब विशेषताओं के कारण लेखक कक्षा में मास्टर के हाव-भाव, ध्वनि, गति और रस को दम रोककर पीता रहता था।

उत्तर: सौंदलगेकर मास्टर का सुरीला गला, अभिनय सहित भाव-ग्रहण कराना, कवियों के संस्मरण सुनाना, स्वयं कविता करना और लेखक की कविताओं पर शाबाशी व शास्त्रीय मार्गदर्शन देना — इन विशेषताओं ने लेखक के मन में कविता के प्रति गहरी रुचि जगाई।

प्रश्न 4

कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?

हल

कविता के प्रति लगाव से पहले:
ढोर चराते हुए, पानी लगाते हुए और दूसरे काम करते हुए अकेलापन बहुत खटकता था।
किसी के साथ बोलते हुए, गपशप करते हुए, हँसी-मजाक करते हुए काम करना अच्छा लगता था।
हमेशा कोई-न-कोई साथ में होना चाहिए, ऐसा लगता था।
कविता के प्रति लगाव के बाद:
अकेलेपन से कोई ऊब नहीं होती थी।
लेखक अपने-आप से खेलने लगा।
उलटा अब ऐसा लगने लगा कि जितना अकेला रहे उतना अच्छा — ताकि कविता ऊँची आवाज में गाई जा सके, किसी भी तरह का अभिनय किया जा सके, कविता गाते-गाते थुई-थुई करके नाचा जा सके।
इस प्रकार अकेलापन जो पहले खटकता था, कविता के लगाव के बाद वह आनंद का स्रोत बन गया।

उत्तर: पहले: अकेलापन खटकता था, साथ की तलाश रहती थी। बाद में: अकेलापन कविता गाने, अभिनय करने और मन से खेलने का अवसर बन गया — जितना अकेले, उतना अच्छा लगने लगा।

प्रश्न 5

आपके खयाल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? तर्क सहित उत्तर दें।

हल

लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था, न कि लेखक के पिता (दादा) का।
लेखक का रवैया:
लेखक को पूरा विश्वास था कि जन्म-भर खेत में काम करते रहने पर भी हाथ कुछ नहीं लगेगा और खेती उन्हें 'गड्ढे' (गर्त) में धकेल रही है।
पढ़ जाने पर नौकरी और कारोबार के अवसर मिलेंगे — यह दूरदर्शी सोच थी।
उसने जनवरी में पाठशाला में लौटकर दो महीने में पाँचवीं की तैयारी का व्यावहारिक प्रस्ताव रखा — साल बचाने की समझदारी दिखाई।
दत्ता जी राव का रवैया:
उन्होंने तुरंत पहचाना कि दादा अपनी मस्ती के लिए बच्चे के जीवन की बलि चढ़ा रहा है।
उन्होंने दादा को समझाकर बच्चे को पाठशाला भेजने पर राजी किया और आश्वासन दिया कि यदि घर से न भेजे तो वे स्वयं पढ़ाएँगे।
दादा (पिता) का रवैया:
दादा खेत के काम के बहाने लेखक का पढ़ना बंद रखना चाहता था, जबकि असल में वह स्वयं गाँव में आजाद घूमता था और खेती में मन नहीं लगाता था।
उसने लेखक पर चोरी, सिनेमा जाने जैसे झूठे आरोप भी लगाए।
यह रवैया बच्चे के भविष्य के प्रति उदासीनता और स्वार्थ को दर्शाता है।

निष्कर्ष: शिक्षा मनुष्य के जीवन को बेहतर बनाती है। लेखक और दत्ता जी राव का यह सोचना सही था कि बच्चे को पढ़ने-लिखने का अवसर मिलना चाहिए।

उत्तर: लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था। दोनों ने पहचाना कि शिक्षा से ही जीवन बेहतर होगा। दादा का रवैया स्वार्थपूर्ण था — वह अपनी सुविधा के लिए बच्चे का भविष्य बर्बाद कर रहा था।

प्रश्न 6

दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि झूठ का सहारा न लेना पड़ता तो आगे का घटनाक्रम क्या होता? अनुमान लगाएँ।

हल

लेखक और माँ ने दत्ता जी राव के घर जाने का बहाना यह बताया कि माँ 'साग-भाजी देने' गई थी। असल में वे लेखक के पढ़ने के लिए दबाव डलवाने गए थे।

यदि यह झूठ न बोला जाता तो संभावित घटनाक्रम इस प्रकार होता —

पहली संभावना: यदि दादा को पता चलता कि माँ और लेखक ने उसके खिलाफ दत्ता जी राव के पास शिकायत की है, तो वह घर में दोनों की 'खैर नहीं' लेता — जैसा लेखक ने स्वयं कहा।

दूसरी संभावना: दादा क्रोध में दत्ता जी राव की बात भी अनसुनी कर देता और लेखक को पाठशाला जाने से रोकता रहता।

तीसरी संभावना: माँ की हिम्मत टूट जाती और वह दत्ता जी राव के पास जाने से ही मना कर देती, क्योंकि दादा के सामने उसका बस नहीं चलता था।

वास्तव में झूठ यहाँ एक विवश अनिवार्यता थी। एक कमज़ोर, पीड़ित परिवार के लिए सीधे मुठभेड़ संभव नहीं थी। झूठ ने उन्हें दत्ता जी राव तक पहुँचने और दादा पर दबाव डलवाने का मौका दिया।

यदि यह अवसर न मिलता, तो संभवतः लेखक का वह साल भी बर्बाद हो जाता और पाठशाला के दरवाजे उसके लिए बंद ही रहते।

उत्तर: यदि झूठ न बोला जाता तो दादा को पता चल जाता और वह माँ व लेखक दोनों को दंडित करता और पाठशाला जाने पर और कड़ा प्रतिबंध लगा देता। यह झूठ विवश परिस्थितियों में बोला गया था और इसी से लेखक को शिक्षा का अवसर मिला।